जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 33 संख्याः 15 प्रभात उदयपुर, रविवार, 16 नवम्बर, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

अंदर ही अंदर विस्फोटक स्थिति पहुँच गई है कांग्रेस में

बेचैनी का कारण राहुल गांधी व उनके काम करने का स्टाइल है, जिसमें वो अभी भी कोई जिम्मेवारी ओढ़ने को तैयार नहीं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 नवंबर। बिहार में कांग्रेस पार्टी की करारी हार के बाद पार्टी के भीतर बेचैनी और असंतोष तेजी से बढ़ रहा है। इस नाराज़गी का केन्द्र राहुल गांधी हैं, जो पार्टी के सारे अहम फैसलों पर नियंत्रण रखते हैं और ऐसे निर्णय ले रहे हैं, जो "तर्कहीन" व समझ से परे लगते हैं।

राहुल गांधी को अब भी एक "पार्ट-टाइम नेता" के रूप में देखा जाता है, जो न तो पार्टी के छोटे-बड़े मुद्दों में रुचि लेते हैं, न ही रोजमर्रा के संगठनात्मक कामकाज में। वे अहम फैसलों में भाग नहीं लेते और उन्होंने पार्टी को ऐसी टीम के हवाले कर दिया है जिसमें के.सी. वेणुगोपाल जैसे लोग शामिल हैं, जो पार्टी को ऐसे चलाते हैं, मानो उन्हें कांग्रेस का "मालिकाना हक" सौंप दिया गया हो।

- जिस तरह से राहुल गांधी कोई रूचि नहीं दिखा रहे पार्टी के कामकाज के बारे में, उनकी छवि एक पार्ट टाइम राजनीतिज्ञ की बन गई है।
- बिहार में उन्होंने एक नौसिखिया व्यक्ति अल्लुवेरा को प्रभारी बना के भेजा, जिसने कभी भी पार्टी में कोई महत्वपूर्ण पद नहीं पाया था।
- अल्लुवेरा और तेजस्वी के संबंध इतने खराब हो गए कि तेजस्वी ने उनसे मिलने को मना कर दिया, सीटों के बंटवारे पर बातचीत तो बहुत दूर की बात है।
- राहुल गांधी ने बिहार में वोट चोरी को अति महतव देते हुए यात्रा निकाली, जिसमें तेजस्वी उनके साथ रहे, माहौल कुछ ठीक होने लगा था कि राहुल गांधी बीस दिन के लिए साउथ अफ्रीका चले गए, कोलंबियन कॉफी को ब्रू करने की बारीकियाँ समझने के लिए और बिहार की राजनीतिक उथल-पुथल को एकदम अनदेखा कर दिया।

बिहार को एक उदाहरण के रूप में लेते हुए, जहाँ पार्टी को भाजपा के हाथों भारी हार का सामना करना पड़ा, वहाँ राहुल ने अल्लुवेरा को बिहार जैसे महत्वपूर्ण चुनावी राज्य का प्रभारी बना दिया, जिन्होंने कभी कोई चुनाव नहीं लड़ा, न किसी छोटे राज्य तक का प्रबंधन संभाला, न उन्हें कोई राजनैतिक अनुभव था। पार्टी में भी उन्होंने कोई खास पद नहीं सँभाला था। राहुल ने उन्हें अपने आदमी के रूप में वहाँ भेजा था, जो निहित स्वार्थों वाले, और लालू यादव के करीबी लोगों को उखाड़ फेंकेगा और अपनी पकड़ बनाएगा।

कांग्रेस बिहार में दिशाहीन थी, उसका कोई जनाधार नहीं बचा था और राज्य में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए बैसाखियों का सहारा ले रही थी।

अल्लुवेरा और तेजस्वी यादव के बीच रिश्ते इतने खराब थे कि तेजस्वी उनसे मिलने तक को तैयार नहीं हुए, गठबंधन पर बातचीत तो दूर की बात थी।

राहुल गांधी ने तेजस्वी के साथ बिहार में एक यात्रा निकाली, लेकिन उसके तुरंत बाद वे 20 से अधिक दिनों के लिए दक्षिण अमेरिका चले गए। यात्रा से जो भी थोड़ी-बहुत गति बनी थी, वह वहीं ख़त्म हो गई, जब राहुल बिहार की स्थिति से पूरी तरह बेखबर "नई कोलंबियन कॉफी" के बारे में सीख रहे थे। बिहार में जो कुछ हो रहा था, उसे उन्होंने पूरी तरह नज़र अंदाज़ कर दिया था।

उन्होंने लालू यादव से मिलने से इनकार कर दिया, सीट बंटवारे में भाग नहीं लिया, टिकटों को लेकर कोई रुचि नहीं दिखाई। उनका चुनाव प्रचार भी बहुत ही सीमित और औपचारिक था।

चुनाव खत्म होने से पहले ही, वे फिर विदेश चले गए और मतगणना के दिन भी मौजूद नहीं थे। वे आज सुबह दिल्ली लौटे, वेणुगोपाल और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'विवाहित वयस्क संतान का पिता की निजी संपत्ति में हक नहीं'

जयपुर, 15 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने संपत्ति विवाद से जुड़े एक मामले में कहा है कि विवाहित या वयस्क संतान का उसके पिता की स्वअर्जित संपत्ति में कोई हक नहीं है। पिता की निजी संपत्ति में बेटा उनकी मंजूरी से ही रह सकता है और पिता के कहने पर उसे संपत्ति को खाली करना होगा। अदालत ने कहा कि बेटे को संपत्ति पर कब्जा पिता ने स्नेहवश दिया था, यह किसी कानूनी अधिकार के तौर पर नहीं दिया गया। वहीं अदालत ने निचली कोर्ट व अपीलीय कोर्ट के आदेश को बरकरार रखते हुए, पिता के खिलाफ मुकदमा कर उन्हें

- हाई कोर्ट ने पिता के खिलाफ मुकदमा करके परेशान करने वाले बेटे पर एक लाख रूपए हर्जाना लगाया।

परेशान करने वाले बेटे पर एक लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। इसके साथ ही अदालत ने अपील को भी खारिज कर दिया है। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश रितेश खत्री की अपील पर दिए।

अदालत ने कहा कि अपीलार्थी पर लगाई गई हर्जाना राशि एक पिता के इस मुकदमे को लड़ने में झेली गई पीड़ा व उत्पीड़न की भरपाई के लिए पर्याप्त नहीं है। लेकिन यह भविष्य के लिए एक उदाहरण साबित होगा, ताकि इस तरह के मुकदमों को दुर्भावनापूर्ण तरीके से

किसी भी सिंगल पार्टी से राजद का वोट शेयर ज्यादा था बिहार में

फिर भी राजद को इतनी करारी हार क्यों मिली

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। लालू प्रसाद के राष्ट्रीय जनता दल (राजद) को हाल ही में खत्म हुए चुनावों में करारी हार का सामना करना पड़ा है, लेकिन उनके राजनैतिक उत्तराधिकारी माने जाने वाले तेजस्वी यादव के लिए एक छोटी सी सकारात्मक बात भी है: 243 सदस्यीय विधानसभा में सिर्फ 25 सीटों पर जीत के बावजूद, इस चुनाव में सबसे अधिक वोट शेयर प्राप्त करने वाली पार्टी राजद ही रही है। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, राजद का वोट शेयर 23 प्रतिशत रहा (2020 के 23.11 प्रतिशत से थोड़ा कम), भाजपा का वोट शेयर 20.08 प्रतिशत रहा (2020 के 19.46 प्रतिशत से ज्यादा), जबकि जदयू को 19.25 प्रतिशत वोट मिले (2020 के 15.39 प्रतिशत से अधिक)।

इसके बावजूद, एनडीए की आँधी में राजद उड़ गया। वजह साफ है: एक गठबंधन के रुप में, एनडीए का कुल वोट शेयर 47 प्रतिशत रहा, जबकि महागठबंधन और उसके साथियों को मिलकर 35.89 प्रतिशत वोट मिले। साधारण शब्दों में कहें, तो राजद अपने सहयोगियों से निराश हुआ। लेकिन इसे दूसरे तरीके से भी देखा जा सकता है: प्रमुख पार्टियों में राजद ने सबसे ज्यादा सीटों- 143-पर चुनाव लड़ा, जबकि भाजपा और जदयू ने 101-101 सीटों पर चुनाव लड़ा, यानी राजद से 42 सीटें कम।

- उनके समर्थकों का मत है कि राजद को महागठबंधन के अन्य घटकों का कोई योगदान नहीं मिला, जबकि एनडीए में जदयू व भाजपा ने एक दूसरे की बहुत मदद की।
- राजद का वोट शेयर 23 प्रतिशत था और महागठबंधन का कुल वोट शेयर 35.89 प्रतिशत।
- दूसरी ओर जदयू का वोट शेयर 19.2 प्रतिशत था व भाजपा का 20.08 प्रतिशत, पर, एनडीए का कुल वोट शेयर 47 प्रतिशत बना।
- राजद ने हर सीट पर कड़ा संघर्ष तो किया, पर, उनकी टांगों में इतना दम नहीं था कि वे फिनिशिंग लाईन को अपने दम पर पार कर लेते।
- पर, दूसरा मत यह भी है कि राजद 143 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जबकि, भाजपा और जदयू दोनों 101-101 सीटों पर लड़े।
- अतः यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजद ने अपनी ताकत का बहुत ज्यादा मूल्यांकन कर लिया, इससे यह हुआ कि राजद का वोट शेयर तो बढ़ा, पर, सीटें नहीं बढ़ीं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री आर.के. सिंह को पार्टी विरोधी गतिविधि के आरोप में निलंबित किया

आर.के. सिंह एक पूर्व आईएएस हैं तथा दो बार आरा से सांसद निर्वाचित रह चुके हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 नवम्बर। विधानसभा चुनाव परिणाम आने के एक दिन बाद, भारतीय जनता पार्टी ने आज पूर्व केन्द्रीय मंत्री राज कुमार सिंह के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उन्हें पार्टी से निलंबित कर दिया। पार्टी ने कहा कि यह कदम उनकी बार-बार की "विरोधी पार्टी" गतिविधियों के कारण उठाया गया है।

इसी तरह की कार्रवाई पार्टी के बागी नेताओं, एमएलसी अशोक अग्रवाल और कटिहार की मेयर उषा अग्रवाल के खिलाफ भी की गई है। इन दोनों ने अपने बेटे सौरव कुमार अग्रवाल के लिए प्रचार किया था, जो विकासशील इंसान पार्टी के टिकट पर कटिहार विधानसभा सीट से भाजपा के मौजूदा विधायक और पूर्व उपमुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद के खिलाफ चुनाव लड़ रहे थे।

- पिछले कई महीनों से आर.के. सिंह पार्टी के राज्य स्तरीय नेतृत्व की जमकर आलोचना कर रहे थे, विशेषकर उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी।
- आर.के. सिंह भाजपा सरकार के पावर खरीद के सौदों में 62 हजार करोड़ रूपए के भारी स्कैम का आरोप लगाते रहे हैं और इस बारे में कई दस्तावेज ऑनलाइन पेश करने का दावा भी किया है व केन्द्रीय सरकार में पावर व रिन्यूएबल एनर्जी विभाग के मंत्री रह चुके हैं तथा 2024 में लोकसभा चुनाव हारने के बाद भाजपा की बिहार इकाई के खिलाफ जमकर आरोप लगाते रहे हैं।

राज्य भाजपा मुख्यालय से जारी निलंबन पत्र में कहा गया कि सिंह के हालिया बयानों से संगठन को नुकसान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाई कोर्ट ने बैंक को 58.63 लाख रूपए लौटाने के आदेश दिए

जयपुर, 15 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि आरबीआई के परिपत्र के अनुसार, साइबर ठगी होने के तीन दिन के भीतर शिकायत करने पर बैंक संबंधित राशि उपभोक्ता को देने के लिए बाध्य है। इसके साथ ही, अदालत ने आईडीबीआई बैंक की अपील को

- हाई कोर्ट की खंडपीठ ने, आईडीबीआई को उपभोक्ता की सायबर ठगी में गई पूरी राशि ब्याज सहित लौटाने को कहा।

खारिज कर एकलपीठ के उस आदेश को सही माना है, जिसमें एकलपीठ ने बैंक को ठगी की गई पूरी 58.93 लाख रुपए की राशि छह फीसदी ब्याज सहित उपभोक्ता को लौटाने को कहा था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लालू की पुत्री रोहिणी आचार्य ने लालू परिवार से नाता तोड़ा और राजनीति छोड़ने का भी निर्णय लिया

रोहिणी आचार्य ने लालू यादव को अपनी एक किडनी दी थी ट्रॉंसप्लांट के लिए, पर, आज वो इतनी खिन्न क्यों हैं कि परिवार से नाता तोड़ने की घोषणा कर चुकी हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 नवंबर। बिहार विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) को मिली भारी हार के एक दिन बाद, पार्टी प्रमुख लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य ने बड़ा धमाका करते हुए कहा है कि वे राजनीति छोड़ रही हैं और अपने परिवार से भी दूरी बना रही हैं।

"एक्स" पर एक रहस्यमयी पोस्ट में, आचार्य ने संकेत दिया कि राजद के वरिष्ठ नेता संजय यादव, जो तेजस्वी के करीब हैं, ने उनसे ऐसा करने को कहा।

- रोहिणी आचार्य यह स्पष्ट नहीं कर पाईं कि ऐसा अहम निर्णय क्यों लिया, हालांकि बार-बार वो कहती रहीं कि वो अपनी गलती स्वीकार करती हैं। हालांकि, यह भी स्पष्ट नहीं हुआ कि उनकी क्या गलती है।
- रोहिणी आचार्य अपने भाई तेज प्रताप यादव के पार्टी से निष्कासन से खुश नहीं थीं, पर, वे कई बार तेजस्वी से भी मधुर संबंध रखने की इच्छा व्यक्त करती रहीं और तेजस्वी के जन्मदिन पर तेजस्वी को "दिल का साफ व जुबान का पक्का" होने की बधाई दी तथा आशा व्यक्त की कि उनके कर्तव्यनिष्ठ भाई की सारी इच्छाएँ पूरी हों और सब स्वप्न फलीभूत हों।

2022 में लालू यादव को अपनी किडनी दान करने वाली रोहिणी आचार्य ने यह भी संकेत दिया कि वे किसी गलती की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले रही हैं, हालांकि, यह स्पष्ट नहीं था कि वे बिहार चुनाव में हार की बात कर रही थीं या किसी और मुद्दे की।

उन्होंने लिखा: "मैं राजनीति छोड़ रही हूँ और अपने परिवार से नाता तोड़ रही हूँ... संजय यादव और रमीज़ ने मुझसे यही कहा था और मैं सारी गलती अपने ऊपर ले रही हूँ।"

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)